Vishal
V.S.J. College

बिहार : बहुद्देशीय नदी घाटी परियोजनाएँ

भारत में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद कृषि क्षेत्र की क्षमता का भरपूर दोहन करने और विकास के लिए समुचित जल-प्रबंधन की आवश्यकता महसूस हुई। बहुद्देशीय नदी योजनाओं का विकास इसी आवश्यकता को पूरा करने के लिए किया गया। सर्वप्रथम तत्कालीन बिहार में TVC (Tennessee Valley Corporation) की तर्ज पर DVC (Damodar Valley Corp) का 1948 में आरंभ किया गया।

बहुद्देशीय योजना का तात्पर्य उस योजना से है जिससे एक योजना से अनेक उद्देश्यों की पूर्ति होती है। ऐसी योजना का उद्देश्य नदियों पर बाँध बनाकर जलविद्युत उत्पन्न करना, उनसे नहरें निकालकर सिंचाई करना, यातायात की सुविधा बढ़ाना, बाढ़ नियंत्रण, मछली पालन, मिट्टी अपरदन को रोकना, पशुपालन को बढ़ावा देना तथा पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र बनाना है।

वर्तमान में बिहार में तीन बहुद्देशीय योजनाएँ (कोसी, सोन, गंडक) संचालित हैं, जिनका वर्णन निम्नांकित है –

- **कोसी बहुद्देशीय नदी घाटी परियोजना :** –

उत्तर पूर्वी बिहार में बहने वाली कोसी नदी की ~~विनाशलीला~~ विनाशलीला से बचने के लिए उ०पू० बिहार में सिंचाई क्षमता में वृद्धि के साथ अन्य लाभ प्राप्त करने के लिए कोसी परियोजना का आरंभ किया गया। इसके उद्देश्य है – बाढ़ नियंत्रण, मलेरिया उन्मूलन, जलविद्युत उत्पादन, सिंचाई एवं भूमि संरक्षण। भूमि संरक्षण के अंतर्गत भूमि अपरदन पर रोक लगाना एवं दलदलों को साफ करके कृषि के लिए अतिरिक्त भूमि प्राप्त करना सम्मिलित है। जल-मार्गों का विकास एवं मत्स्योद्योग भी इसके उद्देश्य हैं।

कोसी परियोजना का सर्वेक्षण कार्य 1953 से आरंभ हुआ। वास्तविक कार्य नेपाल सरकार से समझौते के बाद 1955 में आरंभ हुआ एवं 1963 में यह तैयार हो गया। यह भारत-नेपाल की संयुक्त परियोजना है, जो बिहार सरकार के अधीनस्थ है।

Ajanta Oxford
Scanned with CamScanner

इस परियोजना का कार्य दो चरणों मे संपन्न हुआ। प्रथम चरण मे निम्नलिखित कार्य हुए -
हनुमाननगर अवरोधक बाँध और जलाशय - यह नेपाल मे है। इस जलाशय की क्षमता 3.1 लाख है० मी० है।
कोसी तटबंध - कोसी के दोनो ओर 240 km लंबे तटबंध के निर्माण से 3 लाख हे० भूमि (बिहार - नेपाल की) बाढ़ से सुरक्षित की गयी है। पश्चिमी तटबंध भारदह (नेपाल) से घोंघेपुर (बिहार) तक एवं पूर्वी तटबंध भीमनगर (नेपाल) से कोपड़िया (बिहार) तक है। पुरानी धाराओं मे जल को मोड़ने के लिए जलमोड़ बाँध भी बनाए गए।
पूर्वी कोसी नहर - हनुमाननगर जलाशय के बायें किनारे से निकाला गया। इससे तथा इसकी शाखाओं से नेपाल के तराई तथा बिहार के पूर्णिया, अररिया, कटिहार, सुपौल एवं मधेपुरा जिले की 6 लाख हे० भूमि की सिंचाई होती है।
द्वितीय चरण मे पूर्वी कोसी नहर पर कटैया मे 20 MW क्षमता का जल विद्युत गृह बनाया गया, जिसका आधा नेपाल को और आधा बिहार को मिलता है। इसी चरण में पश्चिमी कोसी नहर का निर्माण हुआ, जिससे नेपाल के तराई मे एवं बिहार के मधुबनी और दरभंगा जिले की लगभग 3 लाख हे० भूमि की सिंचाई होती है।
कोसी परियोजना से उत्तर पूर्वी बिहार मे बाढ़ की विभीषिका कम हुई है, सिंचाई क्षेत्रों के विस्तार के कारण उत्पादन बढ़ा है, मिट्टी पर रेह का प्रभाव कम हुआ है, विस्थापित व्यक्तियों का पुनर्वास हुआ है तथा सामाजिक - आर्थिक स्थिति मे सुधार आया है।
• गंडक बहुद्देशीय परियोजना - यह भारत सरकार की सहायता से बिहार - उत्तर प्रदेश की संयुक्त परियोजना है, जिसमे नेपाल का सहयोग लिया गया है। इससे उ० प० बिहार, पू० उ० उत्तर प्रदेश और नेपाल का तराई क्षेत्र लाभान्वित होता है। इसके अंतर्गत पश्चिमी चंपारण मे वीरपुर/बाल्मीकिनगर

पहाड़ी स्थित बाल्मीकिनगर में गंडक के आर-पार 743 मी० लम्बा बाँध बनाया गया है और नेपाल की सीमा में बाल्मीकि जलाशय का निर्माण किया गया है। इससे चार नहरें निकाली गयी हैं —

• मुख्य पश्चिम नहर — यह 200 km लंबी नहर है, जो नेपाल, उत्तर प्रदेश एवं बिहार से है। इससे उत्तर प्रदेश के देवरिया, महाराजगंज, गोरखपुर तथा बिहार के गोपालगंज, सीवान और सारण जिले मे सिंचाई होती है। बिहार मे इसे "सारण मुख्य नहर" कहा जाता है। यह 4 लाख हे० भूमि को सिंचित करता है।

• मुख्य पूर्वी नहर — इसे 'तिरहुत नहर' भी कहा जाता है। 293 km लम्बी यह नहर गंडक के समानांतर है, जिससे बुढ़ौली, जमुनिया, ~~वैशाली~~ वैशाली आदि शाखाएँ निकाली गयी हैं। इनसे प० चम्पारण, पू० चंपारण, वैशाली, मुजफ्फरपुर और समस्तीपुर जिलों के 5.4 लाख हे० भूमि मे सिन्चाई होती है। पूर्वी नेपाल नहर - 79 km लंबी इस नहर से भी नेपाल मे सिंचाई होती है। प० नेपाल नहर - 34 km लंबी इस नहर से भी नेपाल मे सिंचाई होती है।

पश्चिमी मुख्य नहर पर नेपाल के सुरजपुरा मे 15 MW क्षमता की एवं पूर्वी मुख्य नहर पर वाल्मीकिनगर के पास 15 MW क्षमता की जलविद्युत इकाई की स्थापना की गयी है।

गंडक परियोजना से बिहार की 13.47 लाख हे० भूमि, उत्तर प्रदेश की 5.4 लाख हे० कृषि भूमि एवं नेपाल की 0.63 लाख हे० कृषि भूमि की सिंचाई होती है।

- सोन बहुद्देशीय परियोजना —

यह बिहार की पहली सिंचाई परियोजना थी, जिसे 1968 में बहुद्देशीय योजना मे परिणत कर दिया गया। इसका विकास बिहार के द०प० भाग मे सर्वाधिक सुखाग्रस्त क्षेत्र में किया गया है। कृषि को सिंचाई प्रदान करने के

Scanned with CamScanner

लिए ब्रिटिश द्वारा 1874 में सर्वप्रथम डेहरी में सोन नदी पर अवरोधक बाँध बनाकर पूर्व तथा पश्चिम दिशा में दो नहरें निकाली गयी। पश्चिमी सोन नहर से भोजपुर, बक्सर, रोहतास और कैमूर जिले में तथा पूर्वी सोन नहर से औरंगाबाद, गया, जहानाबाद और पटना जिले में सिंचाई की जाती है। कुल सिंचित क्षेत्र लगभग 269699 हे० था। कालांतर में इसकी उपयोगिता कम हो जाने से 1968 में डेहरी में इन्द्रपुरी के निकट बराज का निर्माण किया गया। इससे नहरें निकालकर पुरानी नहरों से जोड़ दिया गया। फलतः सिंचित क्षेत्रों का विस्तार 420926 हे० तक हो गया।

इस परियोजना के अंतर्गत दो शक्ति गृह बनाए गए। पहला डेहरी के समीप 6.6MW की एवं दूसरा बारुण में 3.3 MW की है।

इस परियोजना को और लाभप्रद बनाने के लिए कार्य किए जा रहे हैं। इसके अंतर्गत बाँध की ऊँचाई बढ़ाना, मजबूत करना एवं उसे चौड़ा यातायात के योग्य बनाना शामिल है। सिंचित क्षेत्र को बढ़ाकर 9 लाख हे० तक करने की योजना है।

Scanned with CamScanner

बिहार की बहुउद्देश्यीय नदी घाटी परियोजना

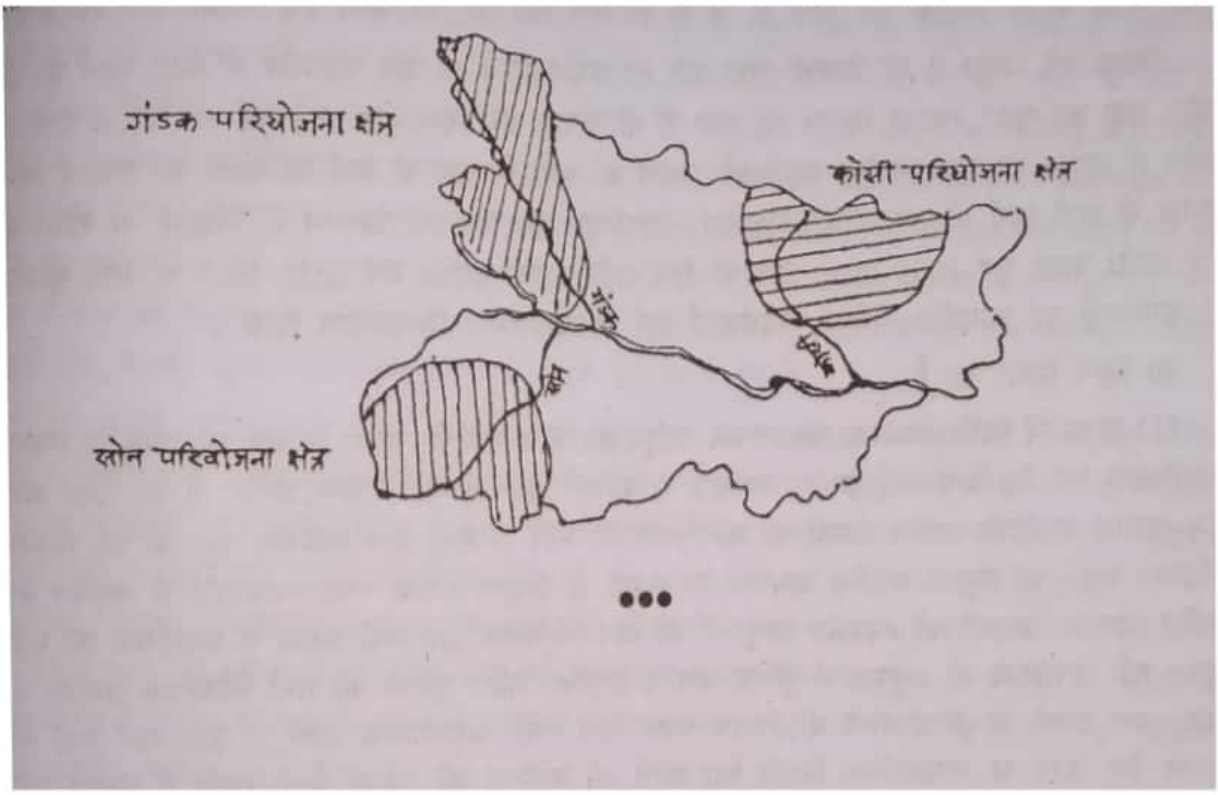

Scanned with CamScanner